The Sameeksha (समीक्षा) Global: A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol 1, Issue 1 - 2017

जोधपुर में पर्यटन विकासः चुनौतियाँ व संभावनाएँ

सुरेश*

जोधपुर अपनी रंग–बिरंगी विविधताओं के कारण हमेशा से ही पर्यटकों का पसंदीदा स्थान रहा है। झरनों व झीलों से जोधपुर प्राकृतिक खूबसूरती, अनेक तरह के मेलों, आकर्षक सामानों से सजी दुकानें, विभिन्न मसालों से महकते भोजन, यहाँ के महाराजाओं का इतिहास बताती ऐतिहासिक इमारतें व जलाशयों इत्यादि अनेक ऐसे खूबसूरत पहलू हैं जो पर्यटको को अपनी ओर आकर्षित करते है। थार मरुस्थल के द्वार पर बसा यह शहर अपनी प्राचीन कथाओं से गूंजता है। इस पूरे शहर में बिखरे वैभवशाली महल, किले और मंदिर इसके ऐतिहासिक गौरव को जीवंत करते हैं वही उत्कृष्ट हस्तकलाएं, लोकनृत्य, संगीत और प्रफुल्ल लोग शहर में रंगीन समा बांध देते हैं। कलात्मक रुप से बनी रंग–बिरंगी पोशाके पहने हुए लोगों को देखकर ऐसा लगता है कि यहाँ की जीवन शैली असाधारण रुप से आकर्षित करने वाली हैं। यहाँ औरते घेरदार लहंगा और पुरुषों द्वारा पहनी हुई रंगीन पगडियाँ शहर में और रंग बिखेर देती हैं। जोधपुर के बाजारों मे खरीददारी करना एक उत्सुकतापूर्ण अनुभव है। यहाँ उत्कृष्ट हस्तशिल्पों के समृद्ध संग्रह का रंगीन प्रदर्शन देखकर आश्चर्य होता है। बंधेज का कपडा, कशीदाकारी किए हुए चमडे, ऊँट की खाल, मखमल की जूतियाँ, आकर्षक रेशम की दरियाँ, मकराना के संगमरमर से बने स्मृतिचिह्न, उपयागी व सजावटी वस्तुओ की विस्तृत किस्में आदि इन बाजारों की शान है। अनगिनत त्यौहारों, समृद्ध अतीत और शाही राज्य की संस्कृति का उत्सव के साथ ही वर्षा ऋतु मे विशाल पैमाने पर मारवाड समारोह भी मनाया जाता है।

12 फरवरी 2017 को रंगीन रोशनी से सजी इमारत के प्रांगण और सभागार मे लोक संस्कृति की ऐसी खूबसूरत छटा बिखरी कि देशी–विदेशी पर्यटको और रसिक संगीत प्रेमी तालियां बजाते हुए झूम उठे। राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र उदयपुर और उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र इलाहाबाद की साझा मेजबानी मे राष्ट्रीय लोकानुरंजन मेला रंगीन रोशनी मे नहाये टाऊन हॉल मे शुरु हुआ। इस मेले मे 10 प्रदेशो के 500 कलाकारो ने भाग लिया।[1]

जोधपुर (सूर्यनगरी) मे सबसे ज्यादा विदेशी पर्यटक फ्रांस से आते हैं। इसके बाद जर्मनी, इंग्लैड, अमरीका का स्थान आता है। वही देशी पर्यटक सबसे ज्यादा गुजरात, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र और दक्षिण भारत से आते हैं।

पर्यटन विभाग के आंकडों के अनुसार फ्रांसिसी पर्यटक पूरे साल जोधपुर आते रहते है लेकिन, साल के चार माह (नवंबर, दिसम्बर, जनवरी, फरवरी) में 50 हजार से ज्यादा फ्रांसिसी पर्यटक जोधपुर आते हैं। वही कई सैलानी जोधपुर मे होली तक रुकते हैं। यहाँ होली खेलने का भी भरपुर लुप्त उठाते हैं। वही पर्यटन व्यवसाय से जुडें लोगों की इन्हीं चार महीनों में चांदी रहती है।[2]

*शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग। ***Correspondence E-mail Id:*** editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

जोधपुर मे पर्यटको को लुभाने वाले प्रमुख स्थल है–मेहरानगढ दुर्ग, जसवंत थडा, उम्मेद भवन, घंटाघर, मण्डोर गार्डन है। जोधपुर मे पर्यटक सबसे ज्यादा खरीददारी मोजडी, बन्धेज, कसीदाकारी वस्तुएं, बुडन, आयरन, टेक्सटाइल आइटम्स, मसाले आदि की करते है। जोधपुर मे सैलानी खान–पान मे दाल–बाटी चुरमा, केर–दाख की सब्जी, मारवाडी थाली (गट्टे की सब्जी, बाजरे की रोटी, मुंग–मोठ की सब्जी, कढी–तुरई काचरी की सब्जी, खीर, रायता, अचार) राजभोग, गुलाब जामुन, मावा की कचौरी, लस्सी, समोसा, मिर्चीबडा व मिठाईयों को पसन्द करते हैं।

जोधपुर मे वर्ष 2011 से 2015 मे विदेशी सैलानियों मे लगभग 26 प्रतिशत की वृद्धि हुई इसी प्रकार देशी सैलानियो मे लगभग 45 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

पर्यटक हर साल करीब 100 करोड से अधिक शॉपिंग जोधपुर मे करते है। शहर के आसपास के गांव सालावास, खेजडला, लूणी, आडुवा, जोजावर मे रोजगार बढाने मे मेहरानगढ की मुख्य भूमिका है।[3]

जोधपुर मे पर्यटन की संभावनाएं

जोधपुर की अपणायत के दीवाने सात समंदर पार तक है। यहाँ की बोली, व्यवहार, संस्कृति, रहन–सहन व ऐतिहासिक नजारे विदेशियों को खूब आकर्षित करते हैं। जोधपुर मे पर्यटन की काफी संभावनाए हैं। जोधपुर मे कई ऐसे आकर्षित स्थल है जिसे विकसित करके पर्यटकां को आकर्षित किया जा सकता है। जैसे–

जोधपुर जिले के लूणी तहसील के सर गांव स्थित सुभद्रा माता मंदिर है जहाँ हर वर्ष बहुत संख्या मे लोग दर्शन करने आते हैं। साथ ही यह पर्यटन के आकर्षण केन्द्र के रुप मे भी प्रसिद्ध हो चुका है। वर्तमान मे मंदिर की गतिविधियों, व्यवस्थाओं आदि की देखभाल एक ट्रस्ट द्वारा की जा रही है। अतः सरकार को इस मंदिर को विश्व पर्यटन में स्थान दिलाने के लिए अपना योगदान देना चाहिए।

अजमेर में आनासागर झील में अब पेलिकन्स की संख्या बढने लगी है क्योकि वहाँ प्रशासन की तरफ से कई प्रयास किये गये हैं जैसे– आवारा लोगों , भिखारी तथा कुत्तो को अन्दर जाने नहीं दिया जाता है। इसी तरह जोधपुर मे भी पेलिकन्स की संख्या को बढ़ाने के लिए हिंसक कुत्तों से पेलिकन्स को बचाने के लिए प्रयास किए जाने चाहिए ताकि जोधपुर व आसपास का क्षेत्र भी पक्षी पर्यटन स्थल के रुप मे उभर सके ।

जोधपुर जिले के जाजीवाल कलां मे कुरजां पंछी पडाव डालने लगे हैं। अतः स्थानीय जनता व सरकार के प्रयास से यह स्थल भी खिचन की तरह एक प्रमुख पक्षी पर्यटन स्थल बन सकता है।

जोधपुर के मंडोर उद्यान का वर्तमान मे हाल यह है कि पत्थर व लोहे की हैरिटेज लाईटे टूटी–फूटी हैं। उद्यान मे लगे झूले के अब अवशेष मात्र रह गए हैं। मंडोर मे कई उद्यानो की तो क्यारियां ही उजड गई हैं। दीमक लगने से अधिकतर हरे पेड़ खोखले हो चुके हैं। यहाँ पर लंगूर खूब गंदगी फैलाते हैं।

अतः सरकार को पर्याप्त बजट का प्रावधान करके इस उद्यान को पुनः विकसित करके पर्यटकों को आकर्षित करने का प्रयास करना चाहिए।

माचिया किले आजादी के दीवानो की जंगी है। वीरो का गवाह रहा मरुधरा का ऐतिहासिक गौरव माचिया किला समय की परतों में कही दब गया है। ऐतिहासिक किले में गलियारों, दालान व चौक में दर्ज

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

स्वतंत्रता सैनानियों को दी गई यातनाओं की स्मृतियाँ वीरानी के साए में दफन होती जा रही हैं। अतः सरकार को इसके अस्तित्व को बचाने के लिए प्रयास करना चाहिए।

जोधपुर मे पर्यटन की चुनौतियाँ व समस्याएँ

अवसंरचना

निम्न स्तर की सड़क सेवा ना केवल पर्यटको के लिए रागरया उत्पन्न करती है बल्कि यह उस स्थान की छवि को भी प्रभावित करती है। पर्यटको के लिए विशेष सुविधाओ से युक्त बसे, महिलाओं के लिए बसों में विशेष सुविधाएं, महिला पर्यटकों के लिए सुरक्षित बसे व टैक्सी व उच्च दर्जे के सड़कमार्गों का निर्माण आदि ऐसे पहलू हैं जिन पर सरकार द्वारा विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है जिससे सैलानी जोधपुर की ओर आकर्षित होंगें।

सुरक्षा

पर्यटकों की सुरक्षा की समस्या एक महत्वपूर्ण समस्या है। महिला सैलानियों के साथ बढते यौन हिंसा के मामले पर्यटन क्षेत्र के लिए एक गंभीर समस्या है। 30 जनवरी 2017 को जोधपुर शहर के भीतर घासमण्डी में सैर करने लिए आए विदेशी पर्यटक से एक युपक व संदिग्ध महिलाओं द्वारा लूटपाट करने का मामला सामने आया था। इस प्रकार की घटनाओं को रोकने के लिए सेना व पुलिस का एक विशेष दल बनाया जाए व उनको विशेष प्रशिक्षण दिया जाए तथा एक हेल्पलाईन शुरु की जाए जो पर्यटकों को सरलता व सुगमता से मदद देने में सदैव तत्पर रहे।

स्वच्छता

तीसरी महत्वपूर्ण समस्या है पर्यटक स्थलों के आस–पास फैली व्यापक गंदगी है। जैसे– वर्तमान मे मंडोर उद्यान के अन्दर नागादड़ी नहर गंदगी से बदबू मार रही है। इसी प्रकार गुलाब सागर के आसपास के घर और सीवरेज लाइन का गंदा पानी अज इस गुलाब सागर मे गिरता है जो दुर्गध मारता है। शहर के लोग ही इस ऐतिहासिक विरासत के आसपास घरों का कचरा निकालकर फेंक जाते हैं। यहाँ तक कि धर्म के नाम पर गायों को रोटियाँ भी आसपास रखते हैं जिससे यहाँ गंदगी फैलती है। गुलाब सागर के आसपास आवारा मवेशिगों का आतंक है। पर्यटक भी इनके डर से यहाँ आने से कतराते हैं। साथ ही यहाँ आए दिन शराबी व असामाजिक तत्व बैठे रहते हैं, जो इसकी खूबसूरती को दागदार बनाते हैं। पर्यटन के लिहाज से यहां कोई भी सुविधा नहीं है। निगम ने यहाँ बोटिंग शुरू करने का असफल प्रयास किया जिससे यहाँ बोटिंग आज तक शुरु नहीं हो सकी। इसी प्रकार जोधपुर हवाई अड्डे के बाहर खुले नाले से बदबू आने के कारण पर्यटक गाडी के शीशे बन्द कर देते हैं। अतः इन स्थलों को विकसित करने के लिए निगम को प्रयास करना चाहिए।

मेहमान नवाजी

पर्यटकों के पास ठहरने के लिए सुरक्षित व किफायती स्थानें के चयन को लेकर अधिक विकल्प नहीं होते। पर्यटन क्षेत्र को प्रभावित करने में यह समस्या भी प्रमुख भूमिका निभाती है। इस समस्या के निदान के लिए यह आवश्यक है कि सरकार पर्यटन क्षेत्र के विकास को प्रमुखता दे व ऐसे सुरक्षित होटलों, रैस्तरां, क्लब हाउस आदि के निर्माण मे पर्यटन मंत्रालय की बढ चढ कर आर्थिक मदद करें।

स्थानीय पहचान को बढ़ावा

पर्यटन की दृष्टि से जोधपुर की एक अन्य समस्या यह भी है कि जोधपुर में अभी भी

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

कई स्थान ऐसे हैं जो पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण व ऐतिहासिक व प्राकतिक दृष्टि से मनोरम है परन्तु इन स्थानों को प्राथनिकता की सूची मे कोई स्थान नहीं दिया गया। अतः ऐसे पर्यटक स्थलों को स्थानीय पहचान बढ़ाने के लिए सरकार को आगे जाना चाहिए। उपरोक्त समस्याओं का समाधान करने के बाद निश्चित तौर पर जोधपुर में पर्यटकों की संख्या में इजाफा होने की संभावना है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1]. 12 फरवरी 2017–राजस्थान पत्रिका।
[2]. 02 मार्च 2017–राजस्थान पत्रिका।
[3]. विश्व पर्यटन दिवस पर राजस्थान पत्रिका में प्रकाशित।

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.